8

पुस्तकालय विद्यालय का शैक्षणिक केंद्र

मूर्तिमती सामंतराय*

विद्यालय पुस्तकालय सभी शैक्षणिक गतिविधियों के पूरक और एक शिक्षण संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करता है। शिक्षा और पुस्तकालयों के बीच काफ़ी घनिष्ठ संबंध हैं। पुस्तकालयों को मूल रूप से ज्ञान के भंडार और प्रचारक के रूप में माना जाता है। दरअसल, पुस्तकालय शिक्षा के अधीन होते हैं। इस लेख का उद्देश्य विद्यालयों में पुस्तकालयों के मूल्यों और महत्व को बताना है। शिक्षा का अर्थ है— ज्ञान, व्यक्तित्व का पूर्ण विकास, सहिष्णुता की भावना, आत्म-अनुशासन, राष्ट्रीय एकीकरण, देशभक्ति, लोकतांत्रिक और नैतिक मूल्यों आदि। प्रस्तुत लेख में शिक्षकों, विद्यार्थियों और समुदाय के सदस्यों की भूमिका का विस्तार से वर्णन किया गया है, जो पुस्तकालय के संसाधनों, सेवाओं का उपयोग करते हैं और जिससे पढ़ने की आदत विकसित होती है।

भारत में शिक्षा मौलिक अधिकार के रूप में 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य है। शिक्षा सर्वांगीण विकास के लिए मूलभूत आवश्यक चीज़ों में से एक है। शिक्षा ने मानव इतिहास के शुरुआत से ही विविधताओं को विकसित करना और अपनी पहुँच का विस्तार करना जारी रखा है। प्रत्येक देश में अपनी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने, उसे बढ़ावा देने के लिए और समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाली को विकसित करता है। शिक्षा सीखने की सुविधा या ज्ञान, कौशल, मूल्यों, विश्वासों और आदतों के अधिग्रहण की प्रक्रिया है। शिक्षा हमें अपने आसपास की दुनिया का ज्ञान देती है। ज्ञान को बेहतर बनाने के लिए हमारे जीवन में शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके साथ ही यह किसी के जीवन में बदलाव लाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरण भी है। बच्चे की प्राथमिक शिक्षा घर पर शुरू होती है और उसके बाद स्कूली शिक्षा की शुरुआत होती है। शिक्षा जीवन को देखने के परिप्रेक्ष्य को विकसित करती है। शिक्षा नए विचारों की उत्पत्ति में सहायक होती है। विचारों के बिना कोई रचनात्मकता नहीं है, रचनात्मकता के बिना राष्ट्र का कोई विकास नहीं है। स्कूली शिक्षा, शिक्षा प्रणाली की पहली सीढ़ी है। शिक्षा प्रणाली में विद्यालय, शिक्षकों के निर्देशन में छात्रों के शिक्षण के लिए सीखने की जगह के साथ-साथ सीखने का माहौल प्रदान करता है। विद्यालय प्रणाली में शिक्षार्थी ईमानदारी, क्षमता निर्माण, आदेश, आज्ञाकारिता जैसे मूल्यों को सीखता

*उप-पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110 016

© NCERT not to be republished

है। विद्यालयों को ज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र माना गया है। यह विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त करने की संभावना प्रदान करता है। ज्ञान का निर्माण ज्ञाता और ज्ञानी के परस्पर संपर्क से होता है। ज्ञान— तथ्यों, कौशल, वस्तुओं की पहचान, जागरूकता या समझ है। ज्ञान विभिन्न माध्यमों से और विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान केवल संचयी नहीं है, यह तेज़ी से बढ़ता है। यह एक असीम गुण है जो कि तमाम चीज़ों के समस्त स्वरूपों को अपने अंदर समाहित करता है। हमारे अस्तित्व के लिए सीखना आवश्यक है, जैसे भोजन हमारे शरीर का पोषण करता है वैसे ही निरंतर सीखना हमारे दिमाग का पोषण करता है। विद्यालय प्रणाली में हमारे पास शिक्षक और विद्यार्थी हैं। शिक्षकों की वैचारिक समझ और ज्ञान किसी भी स्तर पर महत्वपूर्ण है। जब शिक्षक विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए अपने ज्ञान कौशल का उपयोग करते हैं, तो वे उसे और प्रभावी बनाने हेतु निरंतर अभ्यास में लगे रहते हैं। विद्यालयों में पुस्तकालय एक प्रकार के जुड़ाव की प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है।

विद्यालय शिक्षा के साधन के रूप में पुस्तकालय की क्षमताओं को सभी स्तर पर अधिक मान्यता दी गई है। जिस शहर या गाँव में विद्यालय है, वह अपने शैक्षिक कार्यक्रमों के पूरक में एक विद्यालय पुस्तकालय की आवश्यकता महसूस करते हैं। शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों को संदर्भित करना और उनका अध्ययन करना आवश्यक लगता है, जबकि बच्चे पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तक और व्यक्तिगत हितों के अनुकूल पुस्तकों, दोनों को पढ़ने के लिए अधिक उत्साह प्रदर्शित करते हैं। शिक्षा के मानक और गुणवत्ता में योगदान के लिए विद्यालय पुस्तकालयों की अपनी एक अहम भूमिका है। बच्चों का शैक्षिक विकास-शैक्षिक योजनाकारों, प्रशासकों और समान रूप से पुस्तकालय पेशेवरों के लिए चिंता का विषय है। पुस्तकें न केवल बच्चों को पढ़ाती हैं, बल्कि एक तथ्य खोजने का दृष्टिकोण भी विकसित करती हैं। इसके साथ ही वे उन्हें उनके खाली समय का सही उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित भी करती हैं। पुस्तकें हमेशा उन लोगों के लिए जानकारी और आनंद का स्रोत रही हैं, जो जानते हैं कि उनका उपयोग कैसे करना है। पुस्तकों के उपयोग की आदत को बचपन से विकसित करने की आवश्यकता होती है। बच्चे को व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन दोनों सीखने की आवश्यकता है। पुस्तकालय में पुस्तकें और संसाधन इसके सदस्यों को पुस्तकालय के एक महत्वपूर्ण विचारक और प्रभावी उपयोगकर्ता बनने में सक्षम बनाते हैं। पुस्तकालय संसाधनों के उपयोग द्वारा ज्ञान को बढ़ाने और शिक्षा के उद्देश्यों को कैसे पूरा करता है यह नीचे उल्लिखित किया गया है—

1. देशभक्ति की भावना का विकास और एक वैश्विक नागरिक बनना।
2. सांस्कृतिक विविधता के बारे में जानना।
3. ज्ञान के माध्यम से आत्म-खोज की प्रक्रिया जारी रखना।
4. घर पर बच्चे के अनुभवों और विद्यालय के साथ समुदाय के बीच महत्वपूर्ण संबंधों के निर्माण की सुविधा के लिए।

शिक्षण

नई समझ प्राप्त करने की एक प्रक्रिया सीखना है, जो मूल रूप से मनुष्यों, जानवरों और कुछ मशीनों आदि के माध्यम से होती है। सीखने से व्यक्ति के ज्ञान में एक सकरात्मक परिवर्तन होता है। सीखने

© NCERT not to be republished

का अर्थ अलग-अलग लोगों द्वारा अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया गया है। लेकिन सामान्यत: सीखना एक गतिविधि है, जिसके माध्यम से आपको उन चीजों का पता चलता है जो आप नहीं जानते हैं। लगातार सीखना व्यवहार में परिवर्तन लाता है, जैसे-जैसे हम नई चीज़ें सीखते जाते हैं, वैसे-वैसे दिमाग की क्षमता भी लगातार बढ़ती जाती है। सीखना जीवन के अनुभवों का पुनर्गठन है। सीखने की प्रक्रिया केवल शिक्षक और विद्यार्थी के बीच ही नहीं बल्कि विशेषज्ञ और नौसिखिए के बीच भी होती है। सीखना, अध्ययन द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है। सीखने का माहौल ही शारीरिक और सामाजिक व्यवस्था है जिसे विद्यालय कहा जाता है।

अब्दुल कलाम ने इस पर प्रकाश डाला है—

Great books ignite imagination,
Imagination leads to creativity,
Creativity bloosoms thinking,
Thinking provides knowledge,
Knowledge makes you great.

अर्थात्—
महान पुस्तकें कल्पना को प्रज्वलित करती हैं,
कल्पना रचनात्मकता देती है,
रचनात्मकता सोचने की ओर ले जाती है,
विचार ज्ञान प्रदान करता है,
और ज्ञान आपको महान बनाता है।

(*कॉल, 2014*)

विद्यालय सीखने का मंदिर, स्नेह का घर और प्रदर्शन करने के लिए एक खेल का मैदान है। विद्यालयों को मुख्य रूप से पाठ्यक्रम प्रारूप के रूप में विषयों के शिक्षण से संबंधित किया गया है। पूर्व समय में विद्यालय पूरी तरह से पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर होते थे। आज तकनीकी युग में शिक्षकों को पता है कि विद्यार्थियों को सिखाने के लिए कई और विभिन्न उपकरणों और सामग्रियों के उपयोग से उन्हें त्वरित सिखाया जा सकता है, जिसमें प्रिंट और नॉन-प्रिंट मीडिया दोनों शामिल हैं। पुस्तकों, चित्रों, पर्चे, नक्शों, फ़िल्मों, रिकॉर्डिंग, ऑडियो-वीडियो सी.डी., बोलती पुस्तकों, ब्रेल सामग्री और इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स का संग्रह पुस्तकालय को प्रत्येक शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए सोने की खान बनाता है। कई विद्यालयों में विद्यालय पुस्तकालय मीडिया केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। विद्यालय पुस्तकालय— किताबें, कंप्यूटर डेटाबेस, ई-पुस्तकें और अन्य तकनीकी सहायता प्रदान करते हैं। यह सभी विद्यार्थियों के अंदर सोच बनाने और उसे बढ़ाने के लिए एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करते हैं।

बचपन

पियागेट के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार, बचपन में दो चरण होते हैं— पूर्व परिचालन चरण और ठोस परिचालन चरण। बचपन के दौरान एक बच्चे का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और भाषा विकास तेज़ी से होता है। इनके अलावा समझ, नैतिक मूल्यों का विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक विकास, भाषा विकास, कौशल विकास भी होता है। हर विद्यार्थी अपने तरीके से अद्वितीय और विशेष है। आमतौर पर विकास के तीन व्यापक चरण देखने को मिलते हैं— बचपन, मध्य बचपन और किशोरावस्था। जैसे प्रत्येक मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं— भोजन, आश्रय और कपड़े वैसे ही शारीरिक स्नेह,

© NCERT not to be republished

सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण, आत्म-सम्मान, पढ़ने के लिए संसाधन आदि भी आवश्यकताएँ होती हैं। आमतौर पर बचपन एक व्यक्ति का सबसे खुशी का समय होता है। जब हम ठोस संचालन चरण के दौरान पियागेट के चार चरणों को याद करते हैं (यानी 7 से 11 साल की उम्र तक) तब शिक्षार्थी अधिक तार्किक और पद्धतिगत, कम अहं-केंद्रित और बाहरी दुनिया और घटनाओं के बारे में अधिक जागरूक होता है। पियागेट के दर्शन को किसी भी शिक्षा कार्यक्रम में शामिल किया जा सकता है। एक बच्चे के लिए इस स्तर पर मुख्य लक्ष्य उसके मस्तिष्क के अंदर काम का शुरू करना है। इसे *ऑपरेशनल थिंकिंग* कहा जाता है अपने परिवेश में वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग करके वे शब्द समस्याओं और सामान्य समस्याओं को हल कर सकते हैं। वे पिछले ज्ञान से नए ज्ञान का सृजन करते हैं। अंततः वे उससे तार्किक सोच विकसित कर सकते हैं। पुस्तकें पढ़ने से वयस्कों और बच्चों के बीच घनिष्ठ भावनात्मक संबंध भी स्थापित होते हैं। पुस्तकें बच्चों को बुनियादी भाषा कौशल विकसित करने में मदद करती हैं। पुस्तकें बच्चों को नए विचारों को सोचने और उन्हें उत्पन्न करने की राह दिखाती हैं। पढ़ने से बच्चों में जिज्ञासा बढ़ती है और बच्चे के मस्तिष्क को विकसित होने में मदद मिलती है। पुस्तकें बच्चों के आत्मविश्वास को विकसित करने में मदद करती हैं। पुस्तकें लोगों से जुड़ने में मदद करती हैं। पुस्तकें सही-गलत का चयन करने में मदद करती हैं। पुस्तकें बच्चों में नैतिकता और नैतिक मूल्यों का मानचित्र बनाने में मदद करती हैं। पुस्तकें सवाल का जवाब देती हैं और सवाल पैदा करती हैं। पुस्तकें हमारे साथी की तरह हैं। पुस्तकें हमें सपने देखने के लिए प्रेरित करती हैं और उन सपनों को पूरा करने की राह भी दिखाती हैं।

इक्सीसवीं सदी के शिक्षार्थी

यह देखा गया है कि इक्कीसवीं सदी का शिक्षार्थी बचपन से ही तकनीक से जुड़ा हुआ है। समय के साथ-साथ बच्चे पहले की अपेक्षा वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी का उपयोग अधिक कर रहे हैं। प्रौद्योगिकी का प्रभाव उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकी के प्रकार पर निर्भर करता है। कम उम्र के युवाओं में देखा गया है कि वह गेमिंग के लिए इंटरनेट तकनीक का इस्तेमाल अधिक करते हैं। माताएँ अपने बच्चों की समस्याओं के समाधान के लिए समय न दे पाने की वजह से उन्हें कम उम्र में मोबाइल मुहैया करा देती हैं। आजकल के समय में युवा विद्यार्थी कंप्यूटर, मोबाइल फ़ोन का उपयोग कर रहे हैं इसीलिए वे शिशु अवस्था से ही प्रौद्योगिकी को जान जाते हैं। शिक्षा का उद्देश्य समाजीकरण है। जब आप अपने जीवन में मित्रों को जोड़ते हैं तो जीवन बेहतर होता है, लेकिन अब इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स बच्चों के अच्छे दोस्त बन गए हैं। जो भी शब्द वे सुनते हैं, वे गूगल सर्च इंजन से उसका अर्थ जानते हैं। वे प्राकृतिक तरीके से तकनीक का सहारा लेते हैं। इसीलिए वे वयस्कों की तुलना में अधिक तकनीक प्रेमी हैं। वे अपनी तकनीकी क्षमताओं में अधिक विश्वास रखते हैं। आज के बच्चे प्रकृति में अधिक खोज करना चाहते हैं और रटंत पद्धति को पसंद नहीं करते हैं। इसीलिए विद्यालयों में उपलब्ध पुस्तकालय के संसाधनों को उनकी आवश्यकताओं से मेल खाना चाहिए जिससे उनके सीखने की आवश्यकताएँ पूरी हों।

© NCERT not to be republished

शिक्षा के चार स्तंभ

आज प्रत्येक राष्ट्र प्रतिस्पर्धी भावना में सुधार और प्रगति की प्रक्रिया में है। भारत देश के नागरिकों के पास मौजूद शिक्षा ज्ञान, कौशल और दक्षताओं के आधार पर दुनिया से प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता है। वर्तमान सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उच्च कौशल प्रौद्योगिकियों के एकीकरण के लिए और शक्तिशाली अर्थव्यवस्था आदि के लिए अत्यधिक कुशल मानव संसाधन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसीलिए शिक्षण अधिगम गतिविधियों में परिवर्तन करना समय की आवश्यकता है। अच्छा शिक्षण, अच्छी गुणवत्ता वाली सामग्री की प्रस्तुति पर निर्भर करता है। सार्थक शैक्षिक व्यवस्थाओं को महसूस करते हुए, 1996 में यूनेस्को ने शिक्षा के चार स्तंभों की घोषणा की—

1. सीखना — जानने के लिए
2. सीखना — करने के लिए
3. सीखना — साथ रहने के लिए
4. सीखना — कुछ बनने के लिए

पहला स्तंभ जानने के लिए सीखना या सीखने के लिए सीखना पर प्रकाश डालता है। दूसरा स्तंभ इस बात पर ज़ोर देता है कि स्वयं को कैसे प्रबंधित किया जाए, कैसे समूहों का गठन किया जाए और कैसे नेतृत्व की गुणवत्ता विकसित की जाए। तीसरा स्तंभ आत्म-केंद्रितता से सामाजिक विकास की तरफ ले जाता है। अंतिम स्तंभ स्व-मूल्यांकन करना और रचनात्मक तरीके से चुनौतियों का सामना करना सिखाता है। एक निष्पक्ष दिमाग और ज़िम्मेदार इंसान बनने के लिए, ज्ञान के लिए पढ़ना और ज्ञान क्षितिज का विस्तार करना आवश्यक है।

विद्यालयों की भूमिका

शिक्षा, ज्ञान के हस्तांतरण के साथ-साथ व्यक्तियों में समाजीकरण की एक प्रणाली है। यह देश की संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुँचाती है और अतीत की पृष्ठभूमि में जीवन के प्रति युवा के दृष्टिकोण को बदलती है। विद्यालय में शिक्षार्थी, विद्यालय समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ एक निर्धारित नियम व पाठ्यक्रम के संदर्भ में बातचीत करता है। विद्यालय, परिवार और समाज के बीच एक सेतु के रूप में बच्चे को उसकी वयस्क भूमिका के लिए तैयार करने का कार्य करते हैं। स्कूली शिक्षा— भाषा की क्षमता, गणितीय क्षमता, वैज्ञानिक स्वभाव, पर्यावरण की समझ, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देती है। एक आधुनिक शैक्षिक प्रणाली में प्रबंधित विद्यालय पुस्तकालय शैक्षिक पदानुक्रम की आधारशिला होता है। युवाओं की बेहतर शिक्षा एक अच्छे विद्यालय पुस्तकालय की आवश्यकता की परिकल्पना को पूरा करती है। इसीलिए विद्यालय के शिक्षकों, पुस्तकालयाध्यक्षों, माता-पिता और सरकार की ज़िम्मेदारी है कि वे विद्यालयों में संतोषजनक पुस्तकालय सेवाओं की स्थापना और रखरखाव के लिए योजनाओं को ज़्यादा से ज़्यादा विकसित करें।

विद्यालय पुस्तकालय

विद्यालय पुस्तकालय और विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष की उपस्थिति विद्यार्थियों की साक्षरता और उसकी परीक्षण गणना पर एक सकारात्मक प्रभाव डालती है। डिजिटल युग में लोगों को लगता है कि पुस्तकालय जल्द ही अप्रचलित हो जाएँगे लेकिन पुस्तकालय अप्रासंगिक होने से बहुत दूर हैं। विद्यार्थियों को पहले से ज़्यादा उनकी अधिक ज़रूरत है। पुस्तकालय

© NCERT not to be republished

इंटरनेट की तुलना में अधिक सही ज्ञान प्रदान करते हैं। एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म संग्रह, लिखित दस्तावेज़ से काफी अलग है क्योंकि उसकी प्रकाशन प्रक्रिया बहुत सख्त व नियमित है। डेटाबेस तक पहुँचना सिर्फ़ इंटरनेट के माध्यम से संभव नहीं है बल्कि पुस्तकालय के माध्यम से भी संभव है क्योंकि इसमें पंजीकरण की आवश्यकता होती है। पुस्तकालय पाठकों में पढ़ने की आदत को बढ़ाता है। शोधकर्ता और बुद्धिजीवी पुस्तकालयों के उपयोग की वकालत करते हैं। उनके अनुसार पुस्तकालयों का सहयोग साहित्यिक विकास को बढ़ावा देता है। पुस्तकालय अपरिहार्य हैं। देश की साक्षरता को बढ़ावा देने में पुस्तकालयों की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। जब शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष के साथ सहयोग करते हैं, तो पुस्तकालयाध्यक्ष सूचना साक्षरता को बढ़ावा देते हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष शैक्षणिक और तकनीकी विशेषज्ञता पाठ्यक्रम को बढ़ाने में मदद करता है। पुस्तकालयों की उपस्थिति साहित्यिक और पढ़ने वाले के लिए महत्वपूर्ण है। विद्यालय पुस्तकालय, बच्चों में जिज्ञासा, नवीनता और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देते हैं। इस प्रकार पुस्तकालय उनके मन को प्रज्वलित करता है। एक पुस्तकालय— पूर्व-स्कूली, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का अभिन्न भाग होता है। एक विद्यालय पुस्तकालय विद्वानों के संसाधनों का ढेर है, एकाग्रता में सुधार करता है, व्यक्तित्व विकास में मदद करता है, बच्चों को सलाह देने में मदद करता है, सामाजिकता के लिए अवसर प्रदान करता है, पढ़ने को बढ़ावा देता है, बुद्धि विकास में योगदान देता है, जागरूकता बढ़ाता है आदि। विद्यालय पुस्तकालय, विद्यालय जीवन का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यह अध्ययन के लिए काफी जगह और अवसर प्रदान करता है।

विद्यालय पुस्तकालय की आवश्यकता

एक विद्यालय पुस्तकालय, प्राथमिक, माध्यमिक या उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्थापित किया जाता है। आधुनिक समय में पुस्तकालय, विद्यालय पुस्तकालय संसाधन केंद्रों में विकसित किए गए हैं। विद्यालय पुस्तकालय जानकारी प्रदान करता है, पढ़ने की आदतों को विकसित करता है और एक नवीन ज्ञान आधारित समाज को विकसित करता है। विद्यालय पुस्तकालय विद्यार्थियों को आजीवन सीखने के कौशल में निपुण बनाता है, उनमें रचनात्मक सोच और कल्पना विकसित करता है और उन्हें आदर्श और ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में जीने में सक्षम बनाता है।

विद्यालय पुस्तकालय, एक ऐसा स्थान है जहाँ शैक्षणिक पुस्तक और ज्ञान के विशाल संग्रह रखे जाते हैं। छात्र विभिन्न विषयों पर अपने ज्ञान और समझ को बढ़ाने के लिए उसका उपयोग करते हैं। विद्यालय पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है। विद्यार्थी, पुस्तकालय में गणित, विज्ञान, भूगोल, पर्यावरण, साहित्य आदि जैसे विभिन्न विषयों पर पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। स्कूली शिक्षा को सफल बनाने के लिए पुस्तकालय पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और विद्यालय पुस्तकालयों की आवश्यकताओं का विश्लेषण निम्नानुसार किया जा सकता है—

- विद्यार्थी पुस्तकों को निर्धारित समय के लिए पुस्तकालय से उधार ले सकते हैं और उन्हें आगे के अध्ययन के लिए घर ले जा सकते हैं।
- पुस्तकालय, अध्ययन और मानसिक विकास के लिए एक सराहनीय और शांतिपूर्ण स्थान है।
- विद्यार्थियों के बीच आजीवन पढ़ने की आदत बनाते हैं।
- विद्यालय पुस्तकालय विद्यार्थियों को उनकी पढ़ाई में सहायता करते हैं।

© NCERT not to be republished

- विद्यार्थी साहित्य की दुर्लभ पुस्तकों को पढ़कर अपने साहित्यिक कौशल का विकास कर सकते हैं।
- शैक्षिक पत्रिकाओं और अन्य पत्रिकाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को दुनिया भर के नवीनतम विकास से अवगत कराते हैं।
- विद्यालय पुस्तकालय भविष्य के लिए ज्ञान संचालित समुदाय के निर्माण को बढ़ावा देते हैं।
- पुस्तकालय आकर्षक, रोचक और आमंत्रित माहौल के साथ विद्यालय के शैक्षणिक जीवन के केंद्र में एक प्रमुख स्थान पाता है।

विद्यालयी पुस्तकालय बौद्धिक और सामाजिक गतिविधियों का केंद्र है और विद्यालय के कार्य संबंधी परिवेश पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भारत के सरकारी और अर्ध-सरकारी क्षेत्रों के विद्यालय पुस्तकालयों को पुस्तकें रखने, पढ़ने की अपर्याप्त जगह और नियमित धन की अनुपलब्धता से लेकर कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सीखने के संसाधन केंद्र के रूप में पुस्तकालय ज्ञान का पोषण करने और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालय पुस्तकालय हमेशा शिक्षा के लिए एक अनिवार्य कदम, नवीन सोच को इकट्ठा करने के लिए एक आधार, संस्कृति के लिए प्रेरणा और आत्म-विकास में सहायक है। इसीलिए, *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005* में भी इसका इस प्रकार वर्णन किया गया है—

- विद्यालय, पुस्तकालय विद्यालय का अनिवार्य घटक है।
- शिक्षकों और बच्चों को पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
- विद्यालय के पुस्तकालय को एक बौद्धिक स्थान की अवधारणा के रूप में बनाया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य बच्चे का सर्वांगीण विकास है। उस विकास में शिक्षा की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। यह संविधान में निहित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के लक्ष्यों को पूरा करते हुए राष्ट्रीय सामंजस्य, वैज्ञानिक स्वभाव में योगदान देती है। नतीजतन, राष्ट्रीय अखंडता को अपने जाति, पंथ, धर्म या लिंग की परवाह किए बिना लोगों के बीच बंधन और एकजुटता के रूप में विकसित करती है। यह एकता की भावना है। विविधता में भारत की एकता का अर्थ भारत के राष्ट्र में विविधता के साथ-साथ जातीय, धार्मिक और भाषाई संस्कृतियों के अस्तित्व से है — अनेकता में एकता पढ़कर, हम जानते हैं कि 'राज्य कई, राष्ट्र एक; बोलियाँ कई, आवाज़ एक; भाषाएँ कई, भाव एक; रंग कई, झंडा एक; समाज कई, भारत एक; सीमा कई, संस्कृति एक; आजीविका कई, संकल्प एक; रास्ते कई, गंतव्य एक; चेहरे कई, मुस्कान एक है।'

एक सामुदायिक पुस्तकालय के रूप में विद्यालय पुस्तकालय

प्रत्येक विद्यालय में एक पुस्तकालय की स्थापना लोगों के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने में एक लंबा रास्ता तय करती है। विद्यालय के पुस्तकालयों की उपयोगिता समुदाय के सभी सदस्यों को उनके संसाधनों तक पहुँच प्रदान करने में नज़र आती है, क्योंकि समुदाय के पास सीमित संसाधन होते हैं। उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए ऐसे सीमित संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए। विद्यालय पुस्तकालय एक नियमित समय के बाद समुदाय के गैर-विद्यालय जाने वाले सदस्यों

© NCERT not to be republished

को अपनी सेवाएँ उपलब्ध कराकर वयस्क शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष के पास समुदाय के सभी सदस्यों को सेवाएँ देने की प्रेरणा होनी चाहिए। पुस्तकालयाध्यक्ष को समुदाय द्वारा पर्याप्त रूप में मानदेय भी दिया जाना चाहिए जिससे पुस्तकालयाध्यक्ष शिक्षा को जारी रखने में और विशेष रूप से विद्यार्थियों को उनके काम में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहें। जिस प्रकार हब (Hub) आमतौर पर विभिन्न नेटवर्क्स को जोड़ने के लिए उपयोग किया जाता है उसी तरह पुस्तकालयों में एक पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तकालय के केंद्र में रहकर पठनसामग्री, पाठकों और पुस्तकालय स्टॉफ़ को व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करता है। पुस्तकालय पाठक समुदाय के लिए एक भौतिक स्थान के रूप में कार्य करता है। विद्यालय के पुस्तकालयों में बच्चों को अलग-अलग शैक्षिक ज्ञान के लिए ऑडियो और वीडियो सी.डी. आदि के माध्यम से भी उन वांछित सूचनाओं से अवगत कराया जाता है। पुस्तकालय एक सामाजिक स्थान प्रदान करता है क्योंकि यह बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों के मेल-मिलाप का अवसर भी देता है। आमतौर पर विद्यालीय पुस्तकालयाध्यक्ष समुदाय से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में कार्य करते हैं। वे विभिन्न अवसरों पर समूह के पढ़ाने, लिखने और उससे संबंधित चर्चा का हिस्सा बनते हैं। समुदाय के लोग पुस्तकालयाध्यक्ष को अपने सलाहकार, मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में मानते हैं और अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष से सलाह प्राप्त करते हैं। यह एक ऐसी जगह है, जहाँ समाज के लोगों का शिक्षा संसाधनों के साथ एक रिश्ता बनता है और साथ ही पठन संस्कृति का निर्माण होता है।

पुस्तकालय विद्यालय में सामाजिक स्थान प्रदान करता है। पुस्तकालय समुदाय के लिए एक सामाजिक केंद्र और डिजिटल हब के रूप में कार्य करता है और अज्ञानता को दूर कर ज्ञान की ओर ले जाता है।

निष्कर्ष

एक प्रगतिशील नीति हमेशा विद्यालय के पुस्तकालय को एक जीवंत जगह में बदलती है। योग्य, कुशल और सक्षम विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तकालय के संसाधनों को समाज में जागरूकता एवं ज्ञान बढ़ाने हेतु उनको पूरे समाज में फैलाता है। उसके परिणामस्वरूप समाज के अंदर मूल्यों की क्रांति को जागृत किया जा सकता है। हम अपने जीवन को बोझिल, जटिल और पुराने जीवन से मुक्त कर एक ज्ञानपरक, आनंदित और सुंदर जीवन बना सकते हैं। विद्यार्थियों के बीच पढ़ने की आदतों को बढ़ाना विद्यालय पुस्तकालय का प्राथमिक उद्देश्य होता है। पुस्तकालय न केवल विद्यार्थियों को पढ़ने में मदद करता है बल्कि उन्हें पाठकों के रूप में परिवर्तित करता है। इसके साथ ही उन्हें जीवन भर सीखने के कौशल में परिपूर्ण बनाने में मदद करता है। यह रचनात्मकता, नवाचारों, कल्पना आदि जैसी महत्वपूर्ण सोच को भी उनके अंदर विकसित करता है।

पुस्तकों को पढ़ने से युवाओं का मन प्रज्वलित होता है जिसके परिणामस्वरूप वैज्ञानिक स्वभाव की सोच विकसित होती है। पुस्तकालय किसी भी संस्थान का केंद्रबिंदु है। यही कारण है कि संस्थान में पुस्तकालय का होना अनिवार्य है। और जब यहाँ एक शैक्षणिक संस्थान की बात आती है, तो पुस्तकालय

© NCERT not to be republished

सीखने की प्रक्रिया के एक अनिवार्य उपकरण के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसीलिए पुस्तकालय विद्यालय की समस्त शैक्षणिक क्रियाकलापों का केंद्र है।

संदर्भ

कॉल, संगीता. 2014. *नेक्लिन 2014— ए रिपोर्ट. डेलनेट न्यूजलेटर*. वॉल्यूम 21(1). डेलनेट डेवलपिंग लाइब्रेरी. नेटवर्क, नयी दिल्ली. http://www.delnet.in/pdf/delnet-pub-newsletter/december2014.pdf

खन्ना, जे.बी. 1995. रोल ऑफ़ लाइब्रेरी इन प्रमोटिंग स्कूल एजुकेशन. *इंटरनेशनल लाइब्रेरी मूवमेंट*. 17(2). पृ. सं. 125–128. आई. एल. एम. फाउंडेशन, गाजियाबाद.

डेलर्स, जैक्वेस. 1998. लर्निंग: *द ट्रेज़र विदइन, रिपोर्ट टू द यूनेस्को ऑफ़ द इंटरनेशनल कमीशन— यूनेस्को रिपोर्ट*. यूनेस्को, पेरिस.

भाटिया, मोहन. 1985–1986. एजुकेशन पॉलिसी एंड स्कूल लाइब्रेरीज़. *आई.एल.ए. बुलेटिन* अंक XXI. नं. 34. पृ. 106–110.
लूथरा, के.एल. 1987. न्यू एजुकेशन पॉलिसी एंड स्कूल लाइब्रेरीज़. *इंटरनेशनल लाइब्रेरी मूवमेंट*. 9(1). पृ. सं. 31–52. आई.एल.एम. फाउंडेशन, गाजियाबाद.

वर्मा, एस.एल. और अनिल सिंह. 2000. रोल ऑफ़ लाइब्रेरीज़ इन स्कूल एजुकेशन एंड थेइर प्रेज़ेंट सिनेरियो इन इंडिया. *आई.एल.ए. बुलेटिन*. 36(1). पृ. 5–9. इंडियन लाइब्रेरी असोसिएशन.

सामंतराय, मूर्तिमती. 2006. स्कूल लाइब्रेरी — ए सेंटर ऑफ़ लर्निंग. *द प्राइमरी टीचर*. अंक XXXI. नं. 1–2. पृ.सं. 61–65. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2011. एजुकेशन एंड लर्निंग. *वाइब्रेंट चिल्ड्रनस लाइब्रेरी इन द डिजिटल एरा*. पृ. सं. 18–24. प्रतिभा प्रकाशन, नयी दिल्ली.

http://thequotesmaster.com/2017/02/quotes-on-education-by-abdul-kalam . (19 अक्टूबर, 2020 पर देखा गया)

https://www.youtube.com/watch?v=hW0Z0jE-e-Y. (20 अक्तूबर, 2020 पर देखा गया)

© NCERT not to be republished